موضوع الخطبة : الناقض الثاني (من لم يُكَفِّر المشركين أو شك في كفرهم أو صحَّح دينهم)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

द्वतीय भंजक: (जो मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे अथवा उन के धर्म को सही मानें)

الناقض الثاني (من لم يُكَفِّر المشركين أو شك في كفرهم أو صحَّح دينهم)

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह पर ईमान लाना और झूठे पूज्यों का इंकार करना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उन का आदर करो,उस का अनुसरन करो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि जिन चीज़ों पर आकाशीय शरीअ़तों की सहमति है उन में यह भी है कि तौ़हीद (एकेश्वरवाद) दो स्तंभों पर आधारित है:प्रथम स्तंभ:ग़ैरुल्ला (अल्लाह के सिवा)की प्रार्थना से विरक्ति,जिसे अल्लाह ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) की प्रार्थना कहा है।द्वतीय स्तंभ:केवल एक अल्लाह की प्रार्थना का इकरार,और यही तौ़हीद (एकेश्वरवाद) है,अत: जो व्यक्ति मुशरिकों के धर्म से बराअत न करे उस ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा) से विरक्ति एवं उस का इंकार नहीं किया,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿فمن **يكفر بالطاغوت** ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها﴾

अर्थात:अत: जो ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

इस आयत का एक अर्थ यह है कि जिस ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा) का इंकार नहीं किया उस ने मजबूत कड़े को नहीं थामा जो कि इस्लाम धर्म है।

इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय के धर्म से विरक्ति करते हुए फरमाया: ﴿إنني **براء مما تعبدون** * إلا الذي فطرني فإنه سيهدين * وجعلها كلمة في عقبه لعلهم يرجعون﴾

अर्थात:निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है,वही मुझे राह दिखायेगा।तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को।अपनी संतान में ताकि वह (शिर्क से) बचते रहें।

तारिक़ बिन अशयम अलई़ रज़ीअल्लाहु अंहु नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया:जिस ने "لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ" कहा और अल्लाह के सिवा जिन की पूजा की जाती है,उन (सब) का इंकार किया तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित हो गया और उस का हिसाब अल्लाह पर है।[1]

---

[1] **सह़ी मुस्लिम (२३)**

ह़दीस का अर्थ यह है कि:जिस ने उन पूज्यों का इंकार नहीं किया जिन की अल्लाह के सिवा पूजा की जाती है,तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित नहीं,और यह केवल काफिर के हित में होता है।

काफिर को काफिर न कहना इस्लाम भंजकों में से है-इसके कारणों की स्पष्टी

अल्लाह के बंदो!क़ुरान व ह़दीस के उपरोक्त स्पष्टिकरण के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे,अथवा उन के धर्म को सह़ी माने,तो उस ने कुफ्र किया और इस्लाम भंजकों में से एक को किया।

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति असत्य धर्मों के अनुयायियों को काफिर न माने तो वह भी वास्तव में काफिर ही है,मुसलमान नहीं,क्योंकि उस ने उस व्यक्ति को काफिर नहीं माना जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है,और उस ने न तो क़ुरान की सूचनी की पुष्टि की और न पैगंबर के आदेश का पालन किया,और जो व्यक्ति अल्लाह और उस के रसूल की सूचना की पुष्टि न करे वह काफिर है,अल्लाह का शरण।

तथा जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न कहे,उस के लिए ईमान एवं कुफ्र एक समान होते हैं,इन दोनों में अंतर बाकी नहीं रहता,इस लिए वह काफिर है।[2]

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति काफिर को काफिर नहीं मानता वास्तव में वह इस्लाम एवं कुफ्र में अंतर नहीं जानता,जबकि धर्म का यह ऐसा आदेश है जो सब को मालूम है,क़ुरान पाक में अनेक स्थानों पर कुफ्र का इंकार किया गया है और दुनिया एवं आखिरत में काफिरों को मिलने वाली यातनाओं का उल्लेख किया गया है,और जो व्यक्ति काफिर को काफिर न माने वह मुसलमान कहलाने का पात्र नहीं,यहां तक कि इस्लाम एवं कुफ्र का अंतर जान जाए और अपने दिल एवं ज़बान से संपूर्ण रूप से कुफ्र से मुक्ति का प्रदर्शन करे।

- तथा यह कि जो मनुष्य उस व्यक्ति को काफिर न माने जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है तो उस ने अल्लाह के ह़राम किया हुआ शिक्र को ह़लाल कर दिया,वह इस प्रकार से कि जो व्यक्ति मुशरिक है,उसे काफिर नहीं

---

[2] यह शैख सालिह़ अलफौज़ान का कथन है जो उन्होंने अपनी पुस्तक: "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या ७९ में उल्लेख किया है।

माना,और यह अल्लाह के आदेश का उल्लंघन है,बल्कि इस में अल्लाह से युद्ध करना है,अल्लाह का फरमान है:

﴿قل تعالوا أتل ماحرم ربكم عليكم **ألا تشركوا به شيئا**﴾ الآية.

अर्थात:आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या ह़राम (अवैध) किया है?वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ।

इब्ने सादी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: (हर वह व्यक्ति जिस कि शरीअ़त ने जिसको काफिर कहा है,उस को काफिर कहना अनिवार्य है,और जो व्यक्ति उसे काफिर न माने जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है,तो वह अल्लाह और उस के रसूल को झुठलाने वाला है,यह उस समय जब उस के नजदीक शरई़ प्रमाण से उस का काफिर होना सिद्ध हो जाए)[3]।

शैख अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन बाज़ रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं: (जो व्यक्ति काफिर को काफिर न माने वह भी उसी के जैसा है,शर्त यह है कि उसके समक्ष प्रमाण प्रस्तुत किए जाएं,फिर भी वह उसे काफिर न मानने पर अटल रहे तो,उदाहरण स्वरूप जो यहूदी अथवा ई़साई अथवा साम्यवादियों को अथवा उन जैसे अन्य ऐसे काफिरों को काफिर न

---

[3] الفتاوى السعدية: ٩٨

माने जिन का कुफ्र थेड़े ज्ञान एवं बसीरत (समझ बूझ) वाले के लिए भी संदेहजनक नहीं है)[4]

शैख सालिह़ बिन फौज़ान अलफौज़ान रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं: (जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न माने वह उन के जैसा ही काफिर और मुरतद (स्वधर्मत्यागी) है,क्योंकि उसके लिए इस्लाम एवं कुफ्र एक समान हैं,वह इन दोनों में अंतर नहीं करता,इस लिए वह काफिर है)।[5]

ताग़ूत (असत्य पूज्यों) के इंकार करने का महत्व

अल्लाह के बंदो!जैसा कि ताग़ूत (अल्लाह के सिवा)के इंकार करने का बड़ा महत्व है,इस लिए अल्लाह पर ईमान लाने से पूर्व ताग़ूत (अल्लाह के सिवा)के इंकार का उल्लेख है,ताकि बंद के मज़बूत कड़े के थमने का कार्य पूरा हो सके,यह अल्लाह के इस फरमान में है:

﴿فمن **يكفر بالطاغوت** ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها﴾

अर्थात:अत: जो ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

---

[4] "مجموع فتاوى ومقالات متنوعة" (7/418), **दारुल क़ासिम-रियाज**

[5] "شرح نواقض الإسلام" **पृष्ठ संख्या:७९**

यह शुद्धिकरण को शिष्टाचार पर प्राथमिकता देने की श्रेणी से है,अर्थात पाप से पवित्र करना और अच्छाई से सुरूचिपूर्ण करना।

तग़ूत (अल्लाह के सिवा) का इंकार पांच चीज़ों से पूरा होता है

अल्लाह के बंदो!असत्य धर्मों का इंकार पांच चीज़ों के द्वारा किया जाता है,उन के असत्य होने का आस्था रखना,उन की पूजा को छोड़ देना,उन से घृणा रखना,उन के मानने वालों को काफिर मानन,और उन से शत्रुता रखना,ये समस्त शर्तें अल्लाह तआ़ला के इस फरमान से मिलती हैं:

﴿قد كان لكم أسوة حسنة في إبراهيم والذين آمنوا معه إذ قالوا لقومهم إنا برءاء منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا حتى تؤمنوا بالله وحده﴾.

अर्थात:तुम्हारे लिये इबराहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है,जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा:निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त,हम ने तुम से कुफ्र किया,खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर।

यह आयत तीन चीज़ों पर साक्ष्य है:काफिरों से बराअत का प्रदर्शन करना,उनके कार्य-शिर्क करने-से बराअत का प्रदर्शन करना,और उन से घृणा एवं शत्रुता का प्रदर्शन करना।

रही बात उन के पूज्यों की पूजा के असत्य होने का आस्था रखना तो यह इस आयत से स्पष्ट है,क्यों कि यदि उस के असत्य होने का आस्था न हो तो यह तीनों चीज़ें पूरी नहीं हो सकती।

रही बात उन के पूज्यों की पूजा छोड़ने और उन से संबंध समाप्त करने की तो यह इस आयत से सिद्ध है जिस में इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय से कहा:

﴿**وأعتزلكم** وما تدعون من دون الله وأدعوا ربي عسى ألا أكون بدعاء ربي شقيا﴾.

अर्थात:तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा,और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से,मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

कुफ्र से विरक्ति का प्रदर्शन समस्त अंगों से होता है

उपरोक्त आयतों में एक बारीक बिंदु छुपा है,वह यह कि कुफ्र से विरक्ति का प्रदर्शन दिल,जबान और शरीर के अंगों से होता है,दिल से विरक्ति का प्रदर्शन उन से घृणा एवं उनके प्रति कुफ्र का आस्था रख कर होता है,जैसा कि इस आयत में है: ﴿كفرنا بكم﴾.

ज़बान से बराअत का प्रदर्शन इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस विवरण में है जो उन्होंने अपने समुदाय के समक्ष की: ﴿كفرنا بكم﴾.

और शरीर के अंगों से विरक्ति का प्रदर्शन उन के इस कथन में है कि:

﴿**وأعتزلكم** وما تدعون من دون الله﴾.

अर्थात: तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा।

विरक्ति का प्रदर्शन प्रत्येक प्रकार के कुफ़्र से किया जाएगा,न कि केवल प्रार्थना में शिर्क से विरक्ति किया जाएगा

अल्लाह के बंदो! विरक्ति का प्रदर्शन केवल अल्लाह की प्रार्थना में शिर्क से विरक्ति करने में सीमित नहीं है,बल्कि शिर्क व कुफ़्र के समस्त प्रकारों को शामिल है,जैसे अल्लाह को दोषों से चित्रित करना,अथवा धर्म का परिहास उड़ाना,अथवा सह़ाबा को आलोचना का निशाना बनाना,अथवा उम्महातुल मोमेनीन (आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों) पर कीचड़ उछालना,अथवा यह सोचना कि जिबरील ने रिसालत में विश्वासघात की,अथवा ईसाइयत,यहुदियत एवं बौद्ध धर्म को सह़ी मानना,अथवा इस प्रकार के कुफ़्र की चीज़ों को करना जिन के कर्ता के काफिर होने पर सर्वसम्मति है।

अल्लाह के बंदो!इस प्राक्कथन से तौ़हीद (एकेश्वरवाद) और उसके विपरीत के ज्ञान का महत्व स्पष्ट हो गई,तौ़हीद के अध्याय में आपसी प्रेम एवं संबंध का अर्थ स्पष्ट हो गया,उस के विपरीत से बराअत का अर्थ स्पष्ट हो यगा,इस के ज्ञान से दिल सत्य मार्ग पर स्थिर रहता है,क्योंकि विपरीत के द्वारा ही विपरीत का महत्व स्पष्ट होता है,जैसा कि कवि ने कहा:

وبضِدها تتبين الأشياء فالضِّد يظهر حسنه الضد

अर्थात:विपरीत की सुंदरता उस के विपरीत से ही स्पष्ट होती है और चीज़ें अपने विपरीत से ही स्पष्ट होती हैं।

अत: जो व्यक्ति शिर्क से अनजान हो वह तौ़हीद (एकेश्वरवाद) से भी अनजान रहता है,और जिस ने शिर्क से विरक्ति का प्रदर्शन नहीं किया उस ने तौ़हीद को पूरा नहीं किया।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और जान लो जो व्यक्ति मुशरिकों के काफिर होने में संदेह करता है,वह भी उन के ही जैसा है,अत: उदाहरण के लिए जो व्यक्ति यह कहे: (मुझे नहीं पता,यहूदी काफिर है अथवा नहीं),यह किया है: (मुझे नहीं पता,ईसाई काफिर हैं अथवा नहीं),अथवा यह कहे: (मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के सिवा को पुकारने वाला मुसलमान है अथवा नहीं) अथवा यह कहे: (मुझे नहीं मालूम कि फिरऔन काफिर है अथवा नहीं) तो ऐसा कहने वाला व्यक्ति भी काफिर है,इस का कारण यह है कि वह इस बात में संदेह में है कि कुफ्र स्वयं सत्य है अथवा असत्स है।अत: वह निश्चित रूप से कुफ्र असत्य नहीं कहता,और न ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) का इंकार करता है,जबकि अल्लाह ने इस विषय में क़ुरान में निर्णायक रूप से बयान कर दिया है,और यह स्पष्ट कर दिया है कि कुफ्र असत्य है,अब जो व्यक्ति इस स्पष्टिकरण के बावजूद संदेह करे तो इसकी वासतविकता यह है कि क़ुरान में अवतरित अल्लाह के आदेश पर उस का ईमान नहीं है।

तथा यह कि शिर्क करने वाला इस्लाम धर्म से वास्तविक रूप से अपरिचित है,यदि वह इस्लाम धर्म से अवगत होता तो उस के समक्ष

इस्लाम का विपरीत अर्थात कुफ़्र स्पष्ट होता,और जो व्यक्ति इस्लाम धर्म से अवगत न हो उस पर मुसलमान होने का हुकुम कैसे लगाया जा सकता है?!

शैख सुलैमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब[6] रह़िमहुमुल्लाह अपनी पुस्तक: "أوثق عرى الإيمان" में फरमाते हैं:

यदि वह उन के कुफ़्र के प्रति संदेह करे अथवा उन के कुफ़्र से अनजान हो,तो उस के समक्ष क़ुरान एवं ह़दीस के वे प्रमाण प्रस्तुत किये जाएंगे जिन से उन का कुफ़्र स्पष्ट होता है,उस की पश्चात भी यदि संदेह करे अथवा संदेह करे तो वह काफिर है क्योंकि विद्धानों की सर्वसम्मति है कि जो व्यक्ति काफिर के कुफ़्र में संदेह करे तो वह भी काफिर है।[7]

जो व्यक्ति काफिरों के धर्म एवं उन के दीन को सह़ी माने,उस के प्रति आदेश

---

[6] शैख सुलैमान नजद के महान विद्धानों में गिने जाते हैं,उन का जन्म सन १२०० हिजरी में हुआ,उन्होंने अनेक शैखों से ज्ञान प्राप्त किया,उन को कुतुबे सित्तह (बोखारी,मुस्लिम,अबूदाउूद,तिरमिज़ी,निसई एवं इब्ने माजा) में इजाज़ह (वर्णन करने की अनुमति) प्राप्त थी,उन्होंने पठन-पाठन एवं निर्णय का कार्य किया,उन का दिहांत जवानी में १२३४ हिजरी को अल्लाह की अनुमति से शहादत के रूप में हुआ,उनके अनेक लेख हैं,सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "تيسير العزيز الحميد" है,तीन शताब्दियों से विद्धान एवं छात्रगण इससे लाभान्वित हो रहे हैं,तौह़ीदे ईबादत के अध्याय में वह सनद माने जाते हैं,उन के पश्चात आने वाले समस्त लोग और छात्र उन से लाभान्वित होते आए हैं,अल्लाह उन पर अपनी विस्तृत कृपा करे।

[7] مجموع رسائل الشيخ पृष्ठ संख्या १३५,संपादक:डाक्टर वलीद बिन अ़ब्दुर रह़मान आल फरयान ह़फिज़हुल्लाह,प्रकाशक:دار عالم الفوائد

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति काफिरों के मज़हब एवं धर्म को सह़ी माने,तो वह उस व्यक्ति से भी अधिक गुमराह है जो उन के धर्म के असत्य होन पर संदेह करता है,उस का कुफ्र संदेह करने वाले के कुफ्र से अधिक बड़ा है,क्योंकि उसकी वास्तविकता यह है कि वह इस्लाम धर्म को गलत कहता है जिस ने काफिरों के धर्म को असत्य कहा है,वह कुफ्र की रक्षा करता है,उस की दावत देता और उस की सहायता करता है,बल्कि कुफ्र के प्रचार प्रसार के लिए मैदान तैयार करता है,अल्लाह का शरण,उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो इस्लाम धर्म के विरुद्ध आस्थाओं में से किसी आस्था को सह़ी समझे,जैसे यहूदियत, अथवा, ईसाइयत,अथवा समाजवाद,अथवा धर्मनिरपेक्षता जैसे काफिरों के संप्रदायों को सह़ी समझे,अथवा भ्रम में तीनों धर्मों के बीच एकता की दावत दे,अर्थात यहूदियत,ईसाइयत और इस्लाम के बीच,और उन के धर्मों को इबराहीमी धर्म का नाम दे,और असत्य कलाम के द्वारा लोगों को संदेह में डाले और कहे कि यहूदी एवं ईसाई मूसा एवं ईसा के अनुयायी है,यह सत्य को असत्य के साथ मिलाना है,क्योंकि अल्लाह ने इस्लाम धर्म के द्वारा समस्त धर्मों को निरस्त कर दिया,और यदि मूसा एवं ईसा भी जीवित होते तो वे भी इस्लाम धर्म का अनुगमन करते,यह उस समय की बात है जब वे सह़ी धर्म पर स्थिर होते,किन्तु अब स्थिति यह है कि उन के लाए हुए धर्म में विरूपण हो चुकी है

और वह अपने सत्य रूप से बिल्कुल बदल चुके हैं,अत: तौरात के नष्ट होने के पश्चात मूसा के धर्म में विरूपण आगई,और (यहुदियों ने) ओ़ज़ैर की पूजा आरंभ कर दी,और कहने लगे:वह अल्लाह के बेटा हैं?मसीह़ को जब आकाश की ओर उठा लिया गया तो उन के धर्म में भी विरूपण आगई और उन के अनुयायी सलीब की पूजा करने लगे,और कहने लगे कि वह अल्लाह के बेटा हैं,और अल्लाह तीन पूज्यों में से एक है,क्या इस के पश्चात भी यह कहना सह़ी होगा कि यहूदियत और ईसाइयत सह़ी धर्म हैं,जिन के द्वारा अल्लाह की पूजा करना लोगों के लिए जाएज़ है? !कदापि नहीं,अल्लाह का फरमान है:

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ﴾

अर्थात: हे अहले किताब!तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं,जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं,जिन्हें तुम छुपा रहे थे,और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं,अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकार तथा खुली पुस्तक (क़ुरान) आ गई है।

तथा फरमाया:

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُم بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾

अर्थात:हे अहले किताब!तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात हमारे रसूल आ गये हैं,वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे

हैं,ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया,तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है।तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है। अल्लाह अधिक फरमाता है: ﴿ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه وهو في الآخرة من الخاسرين﴾. अर्थात:और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

खुलासा यह कि जो व्यक्ति काफिरों के धर्म को सह़ी माने जैसे यहूदियत अथवा ईसाइयत को,तो वह काफिर है,अल्लाह का शरण।[8]

राफ़िज़ियों से निकट होने की दावत मुशरिकों के धर्म को अच्छा समझने में शामिल है

अल्लाह का शरण,इसी का उदाहरण यह भी है कि राफ़िज़ियों से निकट होने की दावत दी जाए,वे राफज़ी जिन के धर्म का आाधार ही क़ब्रपूजा,आले बैत की पूजा,नबी की सुन्नत का इंकार,सह़ाबा को काफिर मानना,दोनों अमीनों पर आलोचना,अर्थात देवदूतों के अमीन जिबरील और उम्मत के अमीन मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम,क़ुरान पर आलोचना और अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान पर तान व तशनी करने पर है,अत: तो व्यक्ति उन से निकटता बढ़ाने की दावत दे,और उन के धर्म को सुंदर बना कर प्रस्तुत करे तो वह वास्तव में उन से मुक्त नही है,इस लिए

---

[8]देखें:"الإبطال لنظرية الخلط بين دين الإسلام وغيره من الأديان" लेख:शैख अबू बकर ज़ैद,रह़िमहुल्लाह, "شرح نواقض الإسلام"पृष्ठ संख्या८१,लेख:शैख सालिह़ अलफौज़ान ह़फिज़हुल्लाह

वह भी उन के जैसा ही काफिर है,क्योंकि उस ने कुफ्र और निफाक़ (द्विधावाद) को सह़ी समझा,यद्यपि उसे स्वीकार नहीं किया,अल्लाह तआ़ला हमें इससे सुरक्षित रखे।

उपदेश की समाप्ति

अल्लाह के बंदो!तौह़ीद (एकेश्वरवाद) और इस के विपरीत को समझने और शिर्क और इस में पड़ने से सचेत करने के लिए और यह बयान करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है कि मुसलमान पर अनिवार्य है कि मुशरिकों का काफिर न मानने अथवा उन के कुफ्र में संदेह करने अथवा उनके धर्म को सही़ मानने से सचेत रहें,क्योंकि ये तीनों इस्लाम भंजकों में से हैं,मुसलमान पर अनिवार्य है कि जिस व्यक्ति को अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर बताया है उसके कुफ्र पर विश्वास रखे और उस के दिल में इस विषय में किसी प्रकार का संदेह न हो।

अल्लाह समस्त लोगों को जीवन भर तौह़ीद पर स्थिर रहने की तौफीक़ प्रदान करे,क्योंकि जो व्यक्ति शरीअ़त पर स्थिर रहा और तौह़ीद की स्थिति में उस की मृत्यु हुई तो वह बिना हिसाब व किताब के स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما﴾

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ करते हैं।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी